शिक्षा एवं समाज उन्नति के लिए समर्पित

SHIKSHA ISHARA

शिक्षा ईशारा

RNI No: DELBIL/2014/60339

Email : shikshaishara@gmail.com

द्विभाषीय मासिक समाचार पत्र

विद्या बिना मति गई।
मति बिना नीति गई।।
नीति बिना गति गई।
गति बिना वित्त गया।।
वित्त बिना।
लाचारी गरीबी आई।।
इतने अनर्थ।
एक विद्या बिना हुए।
-जोतिराव फुले

वर्ष : 06 | अंक : 05 | जनवरी, 2020 | नई दिल्ली | पृष्ठ : 8 | मूल्य : 5 रूपये

सावित्रीबाई फुले की जंयति

दिल्ली। भारत की प्रथम प्रशिक्षित शिक्षिका सावित्रीबाई फुले की 189वीं जंयति **3 जनवरी** को विभिन्न आयोजन के साथ देश भर में मनाई।

जंतर मंतर दिल्ली पर श्रीपाल सैनी राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सुप्रिमों राजकुमार सैनी लोकतंत्र सुरक्षा पार्टी के आव्हान पर प्रदर्शन करके सरकार को ज्ञापन दिया, जिसमें फुले दम्पत्ति को भारतरत्न दिये जाने की माँग की गई ।

मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, तेलांगना, कर्नाटक, छत्तीसगढ, उड़ीसा, बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, में सावित्रीबाई फुले की प्रतिमा फोटो पर अतिथियों समाज सेवियों ने पुष्पांजली अर्पित की । जुलुस निकाले सभा सम्मेलन में फुले दम्पत्ति को भारतरत्न देने एवं उनके आदर्शों पर चलाने का संकल्प लिया।

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष गंगाराम गेहलोत, कोषाध्यक्ष रामलाल कच्छावा, महासचिव रामनारायण चौहान ने सावित्रीबाई फुले की जीवनी उनके मानवता वादी, समतामय समाज, शिक्षा के लिये दिये योगदान को याद किया ।

सावित्रीबाई फुले की जयंती पर उन्हें सादर नमन। उन्होंने सामाजिक एकता, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। सामाजिक चेतना के लिए उनका संघर्ष देशवासियों को सदा प्रेरित करता रहेगा।

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

भारतीय समाज में लड़कियों और दलितों के लिए शिक्षा के दरवाजे खोलने वाली पहली महिला अध्यापिका सावित्रीबाई फुले की जयंती पर सादर नमन।

राहुल गांधी, कांग्रेस नेता

सावित्रीबाई फुले ने सभी के लिए एक बेहतर, अधिक समान दुनिया के लिए लड़ाई लड़ी। उनकी जयंती पर आइए उनकी विरासत को जीवित रखने का संकल्प लें।

हरसिमरत कौर बादल, केंद्रीय मंत्री

जब माता सावित्रीबाई फुले ने पुणे में लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला तब उच्च वर्ग के लोगों ने खूब उलाहना दिया। लेकिन सावित्रीबाई फुले अपने संकल्प पर अडिग रही। महान चिंतक और क्रांति की वाहक को नमन।

प्रियंका गांधी वाड्रा, कांग्रेस महासचिव

बधाई

रामलाल कच्छावा
10 जनवरी जन्मदिवस

RATNADEEP INFRASTRUCTURE PVT LTD

Managing, Director

126, 1st Floor, Neelam Shopping Center, Sardar Chowk, Krishnangar,
Ahmedabad-382345, (Gujarat) Ph.: +91 79 22860012, +91 7922821196
Web: www.ratnadeepinfrastructure.com,
E-mail : info@ratnadeepinfrastructure.com, ratnadeepi2009@gmail.com

सम्पादक की कलम से

बोर्ड तक शिक्षा निशुल्क हो

वैसे तो कहने के लिए काफी है कि हमारे देश में संविधान के अनुसार सबको समान अवसर मिलेंगे किन्तु प्रायः अभी तक तो विशिष्ट वर्ण को ही शिक्षा पाकर देश के संसाधन संचालन करने के ही अवसर मिल रहे है। दबे कुचले अर्थहीन वर्ण में पैदा होने वाले मानवों का आरक्षण मिलने के बाद एवं 72 वर्ष की आजादी के बाद भी इस वर्ण के विद्यार्थियों को उनकी जनसंख्या के अनुपात में न तो शिक्षा मिली और ना हि आगे बढ़ने और सम्पन्न होने के अवसर, इसका मूल कारण सत्ता संचालित करने वालों की इच्छाशक्ति की कमी ही मान सकते है।

कहने को तो तत्कालिन मानव संसाधन मंत्री मुरली मनोहर जोशी के काल में ''सर्वशिक्षा अभियान'' चलाने का ऐलान किया प्रयास भी हुऐ किन्तु समुचित शिक्षा नीति के अभाव में आज भी लगभग 30प्रतिशत् नागरिक अशिक्षित ही बने हुऐ हैं, अर्धशिक्षित भी लगभग 50 प्रतिशत् से अधिक है। उच्च एवं तकनिकी उच्च शिक्षित तो 2 प्रतिशत् से भी कम ही होंगे। और इनमें भी लगभग विशेष वर्ण के परिवार के विद्यार्थि ही है। यह आश्चर्य जनक है।

वर्तमान तक तो शासन की शिक्षानीति ही ऐसी है कि जिनके पास धन है वे अपने लाड़लों को मोटी राशि की फीस एवं ट्यूशन फीस देकर अच्छी से अच्छी शिक्षा नर्सरी से ही दिलवा सकते है, किन्तु धनहीन परिवार के विद्यार्थि तो कितने ही काबिल बुद्धि वाले हो इनके पास धन की कमी के कारण समुचित शिक्षा से वंचित ही रहना पड़ रहा है। सरकारों के बजट भी इनके लिए आंवटित नहीं है। देश की जीडीपी का मात्र 3 प्रतिशत् बजट शिक्षा के लिए है।

हाँ दिल्ली की केजरीवाल सरकार जब से बनी है, तब से ही शिक्षा का बजट में 25% तक का आवंटन होने एवं आंवटित बजट का उपयोग कर दिल्ली की शिक्षण संस्थान, शिक्षक शिक्षण साम्रगी, शिक्षण व्यवस्था में सुधार कर ऐसी व्यवस्था कर दी है कि निजि विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिवक अपने बच्चों को दिल्ली के सरकारी स्कूलों में भिजवा रहे है। और देश भर में केजरीवाल सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन करना प्रारम्भ रखा है।

सामाजिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतीराव फुले ने अपनी इच्छाशक्ति के कारण उस काल में शिक्षा लेकर देश में पत्नि सावित्रीबाई फुले को शिक्षित किया और प्रथम शिक्षिका बनाकर पहला बालिका विद्यालय तमाम विरोधों अवरोधों के बाद भी प्रारम्भ कर नारी शिक्षा का आगाज कर दिया । फुले चाहते थे कि हमारे देश में निशुल्क–रोजगार मूलक शिक्षा प्रत्येक नागरिक को देने का दायित्व सरकार का हो। इसी आधार पर बाबा साहेब अम्बेड़कर ने शिक्षा को मूलभूत अधिकार में शामिल किया किन्तु आजाद भारत की सरकारों ने अपनी शिक्षा नीतियाँ भी इस दिशा में नहीं बनाई और बजट प्रावधान भी समुचित उपलब्ध नहीं कराया। इसी कारण धनहिन योग्य विद्यार्थियों को भी अच्छी शिक्षा पाने से वंचित रहना पड़ रहा है।

हमारे यहाँ शिक्षा तो धीरे–धीरे शिक्षा उद्योग की दिशा में तेजी से बढ़ रही है। शिक्षा उद्योग के माध्यम से अनेक परिवार व संस्थाऐं उद्योगपति बनती जा रही है।, इन संस्थाओं में भी सरकार की मान्यता होने से धन भी मिल रहा है, ऐसे में स्कूल संचालित करने हेतु प्रोत्साहन मिल रहा है। नर्सरी संचालक भी बड़ी राशि अभिभावकों से लेकर बच्चों को शिक्षित कर रहे है। और पैसा खर्च करके जो परिवार सक्षम है उनके बच्चे ही देश के संसाधनों का उपभोग करने लायक बन रहे है। किन्तु धनहिन परिवारों के बच्चे तो पिछड़ते जा रहे है।

सरकारी विद्यालयों में जितने भी विद्यार्थियों के नाम चढ़ते है उसी अनुपात में सरकार बच्चों को युनिफार्म भोजन छात्रवृत्ति आदि सुविधा भले ही उपलब्ध करा रही हो किन्तु यहाँ शिक्षा पाने का माहोल ही नहीं बन पा रहा है। प्रशिक्षित शिक्षक ही बहुत कम है, और कम से कम पैसा देकर अनेक प्रकार के शिक्षकों के केडर बनाकर इन सरकारी स्कूलों में शिक्षित कराने के बजाय खाना पूर्ति ही हो रही है। सरकारी स्कूलों में प्रायः धनहीन परिवार के विद्यार्थियों की संख्या होती है। इस प्रकार की शिक्षा तो अर्धशिक्षा से आगे ही नहीं बढ़ पा रही है।

हमारी शिक्षा नीति सबको शिक्षित करने की नहीं है, शायद यह हो कि यदि सबको शिक्षित उच्च शिक्षित कर दिया जायेगा तो देश में निमार्ण उत्पादन करने वाले श्रमिक तो मिलेंगे ही नहीं और शिक्षित होकर जागरूक होकर अपने अधिकारों की माँग करने लगेगें । सबको रोजगार भी नहीं दे पायेंगे। इस कारण शिक्षा नीति ऐसी बने जो कहने में तो अच्छी लगे किन्तु सभी शिक्षित न होने पायें। और यह प्रक्रिया निरन्तर जारी है। कई रंग–रूप, विचार, प्रोग्राम, उद्येश्य की पार्टियों की सरकार बनी किन्तु इस ढर्रे को समाप्त ही नहीं कर पा रही है।

इन्हीं कारणों से आने वाली शिक्षानीति ऐसी बने कि बोर्ड स्तर तक सबको निशुल्क शिक्षा और रोजगार मूलक शिक्षा पाने का अधिकार हो एवं शिक्षण के लिए समुचित व्यवस्था हो, तो देश का प्रत्येक नागरिक समुचित शिक्षित होकर समान रूप से आगे बढ़ सके ।

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान इस दिशा में कार्य कर रहा है।

आइयें सरकारों से अपेक्षा करें कि देश का प्रत्येक नागरिक बोर्ड की शिक्षा तक निशुल्क –रोजगार मूलक शिक्षा पाने लायक बजट बनाकर नागरिकों को राष्ट्र प्रेमी बनायें।

सावित्रीबाई फुले की जंयति पर स्मरण ।

जय ज्योति– जय क्रान्ति

– रामनारायण चौहान

प्रातः स्मरणीय भारतीय प्रथम शिक्षिका माँ सावित्री बाई फूले 189वीं जयन्ती

(03-01-1831 से 10-03-1897)

भारत में कुछ शास्त्र कहते हैं 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' वहीं दूसरी ओर कुछ शास्त्रों में लिखा 'ढोल, गवार, शूद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी' दोनों बातें एक दूसरे की ध्रुवीय विपरीत हैं जैसे कि पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव ग्लोब में क्रमशः ऊपर और नीचे हैशास्त्र की बात छोड़कर तथ्य यही है कि भारत में 19वीं शताब्दी के समय स्त्री जगत त्रिस्तरीय दासता से पीड़ित थी (1) अंग्रेजों की दासता (2) ब्राम्हणी/सामाजिक दासता (3) घर में पुरुष की दासता।

इन विषम परिस्थितियों में किसी स्त्री का प्रथम शिक्षिका बनना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य था। प्रथम शिक्षिका का लक्ष्य पाने में निश्चय ही सर्वप्रथम साधुवाद तो प्रातः स्मरणीय माँ सावित्री बाई फूले को देना होगा जिन्होंने शादी के बाद अन्य दायित्वों का निर्वाह करते हुए स्वयं अपने पति महामना फूले से शिक्षा लेकर आगे बढ़ीं और तत्पश्चात् शिक्षा जगत में बहुजनों हेतु शिक्षा का शुभारम्भ करना बड़े साहस एवं त्याग का प्रतीक है। आपका जन्म 3 जनवरी 1831 को सतारा जिला (महाराष्ट्र) के तायगांव में हुआ था, आपके पिता का नाम खण्डो जी नेवसे एवं माता का नाम लक्ष्मी बाई नेवसे (माली जाति का उपनाम) थाआपकी शादी 9 वर्ष की अवस्था में (1840) हुई थी एवं महामना फूले (उनके पति) तब 13 वर्ष के थे। उन दिनों भारत में बाल विवाह की प्रथा थी जो आज भी सुदूर गांवों या पिछड़े क्षेत्रों में दिखाई पड़ती है। सभी प्रथायें जैसे बाल विवाह प्रथा, सती प्रथा, छुआछूत प्रथा, नारी अशिक्षा प्रथा एक मानसिक विकलांगता का प्रतीक है ताकि बहुजन समाज का जीवन और भी पशुवत बना रहे। माँ सावित्री बाई फूले ने अदम्य साहस के साथ इन कुप्रथाओं पर अपने पति महामना फूले के साथ कदम से कदम मिलाकर जीवन भर कुठाराघात किया। उनके बारे में ठीक ही कहा गया है।

'राह में हमेशा रोड़ा अटकाया जाने लगा, छेड़छाड़, गन्दगी का सामना सावित्री ने किया, जितना विरोध उतना ही और वह आगे बढ़ी, बढे दम्पत्ति दोनों कफन बांध माथे पर लिया।'

नारी शिक्षा, शूद्र शिक्षा के लिए वर्ष 1848 से लेकर जीवन पर्यन्त 10 मार्च 1897 तक वह सामाजिक कुरीतियों को मिटाने हेतु संघर्षरत रहीं तथा महामना फूले का आजीवन उत्साह वर्धन करती रहीं। वर्ष 1873 में सत्य शोधक समाज की स्थापना के बाद एवं महामना फूले के परिनिर्वाण (1890) के बाद इस आन्दोलन को गांव–गांव तक ले जाने में वह सफल रहीं। महामना फूले द्वारा लिखित पुस्तक "सार्वजनिक सत्य धर्मश को माँ सावित्री बाई फूले ने ही 1891 में गहन आर्थिक तंगी में छपवाया था। आज यह पुस्तक विश्व धर्म की प्रतीक है।

अन्त में यही कहना है – जिनके साहस, शौर्य का कायल हूँ मैं ज्यों जग को प्रभावित किया फूले दम्पत्ति ने उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित कर आज मैं संकल्प लूँ उनके शेष कार्य को निपटाने में।

अपेक्षा :– हम सब 85 प्रतिशत विशेषतः माली, सैनी, कुशवाहा, मौर्य, शाक्य **SC/ST** समाज फूले दम्पत्ति के अधूरे कार्य को पूरा करने हेतु तन, मन, धन से शिक्षा की अभिनव योजना में योगदान दें। इस योजना के अन्तर्गत आवासीय महामना फूले शिक्षण संस्थान की स्थापना होनी है जिसके लिए भामाशाहों की महती आवश्यकता है ताकि इस ऐतिहासिक कार्य को यथाशीघ्र पूरा किया जा सके।

एस0बी0 सैनी (B.E.)
पूर्व मण्डल अभियन्ता BSNL
महामंत्री पंचशील सोसाइटी कानपुर
मो0: 9415407576

आपसी बात

शिक्षा इशारा अब यह कालम इसलिये बना रहा है कि देश के अनेक भागों से मोबाइल/फोन पर बातचित होती है इसका रिकार्ड भी रखना फर्ज समझ रहा है। तो आइये मो. 09990952171 या फोन नं. 01145082626 पर हमारे कार्यालय में जो भी बातचीत होगी उसके अंश प्रकाशित होते रहेंगें।

माह : नवम्बर - दिसम्बर, 2019

- महाराष्ट्र– शंकरराव लिंगे, (सोलापुर), शिवदास महाजन(पूणे), राजेन्द्र सैनी (मुम्बई), श्रीकृष्ण बन्सोड़ (अमरावती)।
- मध्य प्रदेश – जगदीश सैनी, टीकाराम पटेल (जबलपुर), जी.पी. माली, राजा हारोड़, डॉ. प्रेमलता सैनी, राजेन्द्र कुमार सैनी, आर.डी. माने, डॉ. छाया सैनी, (भोपाल), लीलाधर धारवे, गजानन्द रामी, विशाल चौहान, शिवनारायण गेहलोत, (उज्जैन), राजेश दौड़के (छिन्दवाड़ा), लोकेश वर्मा (महू), विनोद मकवाना (बड़नगर),यादवलाल चौहान, सत्यनारायण चौहान (इन्दौर), विनोद माली (जावरा), नारायण यादव (हरसोला), वासुदेव बडा (सौंसर)। सुनील राठौर (पिपलाल्या मण्डी), राजेश बिन्जवे (हाटपिल्या),
- हरियाणा– राजेन्द्र कुमार सैनी (लाड़वा), राजकुमार सैनी दिलबाग सिंह (गुड़गाँव) ।
- दिल्ली– चौ.इन्दराजसिंह सैनी, रमेश कुमार सैनी, जी.एल. सैनी, के.पी.सिंह सी.ए.,शिवराज सैनी, श्रीपाल सैनी, मन्जितसिंह सैनी, आजाद सिंह सैनी, डी. एल. सैनी,।
- गुजरात / गंगाराम गेहलोत, (अहमदाबाद), ।
- बिहार– संजय मालाकार, रवि कुमार, (पटना), मदन मोहन भक्त (भोजपुर), गौरीशंकर प्रसाद (पहलेजा) ।
- छत्तीसगढ़– हरीश पटेल(बालोद), मुन्नालाल सैनी, हेमन्त सैनी (रायपुर)।
- पंजाब– हरभजनसिंह सैनी (मोहाली),
- कर्नाटक – एन.एल. नरेन्द्र बाबू ,शिओम माली (बैंगलोर), भीमाशंकर मालागार (वासवान बागेवाड़ा)
- उत्तरप्रदेश– इन्जि. एस.बी. सैनी (कानपूर) श्रीचन्द सैनी, (मेरठ), संजय श्रीमाली, मनोज पुष्पद, ध्रुव कुमार (ललितपुर), नारायणसिंह कुशवाहा (आगरा)।
- जम्मू एण्ड काश्मीर– ओंकारसिंह सैनी (सांबा)
- राजस्थान– बी.सी. पंवार (अजमेर) जगदीश सैनी, बुधसिंह सैनी, पूनमचन्द कच्छावा, कालूराम बुनकर (जयपुर), मोतीबाबा फुले (फालाना), पी. सी. सैनी, (कोटा) । हरगोपाल भाटी (झालावाड़)
- तमिलनाडू– व्ही. एम. पल्लव मोहन वर्मा (चेन्नई) ।
- उड़ीसा – अनुदराम पटेल (नुवापाड़ा) ।
- हिमाचाल प्रदेश– पी.डी. सैनी (कांगड़ा) ।

सामाजिक चिंतन (भाग-31)

इच्छा शक्ति बनाकर समाज सेवा करो

हम मानव है, और प्रत्येक मानव अपना अपने वालों का, अपने गाँव का, अपने समाज का, अपने प्रदेश का, अपने देश की सेवा करना चाहता है। और इन्हीं समाज सेवियों की इच्छा शक्ति बनाकर काम करने से उत्थान, विकास, एकता के सपने साकार हो रहे है।

याद करो जब आदिम युग में मानव ने खोज करते हुऐ, आज का सक्षम मानव बनने लायक साधन सुविधा–स्थापित कर दी है। अभी और खोज चल रही है जिससे मानव चाँद–सूरज मंगल गृह पर अपनी उपस्थिति बनाकर वहाँ की अपार संसाधन युक्त भण्डारों का उपभोग प्रकृति के किसी भी छोर तक पहुँचाने हेतु प्रयासरत है।

प्रत्येक मनुष्य अपनी सन्तानों को ऊँचे से ऊँची शिक्षा दिलाकर सबसे आगे बढ़ाने हेतु तत्पर है, और सफलता भी लगातार मिल रही है। यह बात और है कि जिसकी इच्छाशक्ति ही नहीं हो वह तो स्वंय और अपने वालों को भी आगे नहीं बढ़ा पा रहा है। यही कारण है कि जो समाज सेवा के लिए इच्छा शक्ति से काम करेगा वह सफल जीवन का हकदार माना जाता है।

कई समाजों के कर्णधारों ने अपने समाज के लिये विचार किया। अच्छा–बुरा देखा समझा और समाज की उन्नति के लिए योजनाएं कार्यक्रम बनाये, प्रयास किये, परीणाम स्वरूप ऐसे समाज की साख भी बहुत मजबूत हुईऐसे समाज के लिए शिक्षा प्राप्त करके प्रगति की और आगे बढ़ते गये । किन्तु ऐसे समाज जिन्हें शिक्षा ही नहीं मिली (कारण अनेक है।) उसके समाज की प्रगति के मार्ग ही नहीं खुले। ऐसे समाज पिछड़ा बना हुआ है। और जो शिक्षित–प्रशिक्षित होकर लैस हो गये उनको समाज कि दिशा मजबूत करने में आसानी हुई और ये समाज भले ही जनमानस आबादी में नाममात्र के हो किन्तु शिक्षित –प्रशिक्षित होकर संसाधनों पर पूरी तरह से अपना कब्जा करने में सफल है, सभी क्षेत्र उद्योग व्यवस्था व्यापार पर भी इनका कब्जा बन गया । लेकिन जो शिक्षित–प्रशिक्षित नहीं हो सके (कारण कुछ भी हो) वे पिछड़े ही बने रहे। ऐसे उपेक्षित समाजों –जातियों वर्णों को समानता से आगे बढ़ने के लिए समुचित बजट का प्रावधान तक नहीं करते और ये वर्ग पिछड़े ही बने हुए है।

इन पिछड़े समाजों को अगड़े समाज की बराबरी में लाने हेतु युग पुरूष महात्मा जोतीराव फुले, सावित्रीबाई फुले, छत्रपति शाहू महाराज बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर जैसे महामानवों की इच्छशक्ति समाज सेवा में लगाने से आजादी के बाद भारत में अवसर की समानता का लाभ मिलना प्रारम्भ हो गया। किन्तु आबादी के अनुपात में इनके के लिए समुचित लाभ नहीं मिल पा रहा है।

रामनारायण चौहान

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान

ए-103, ताज अपार्टमेन्ट्स, गाजीपुर, दिल्ली -110096
फोन/फैक्स नं. 011-45082626, मो. : 09990952171
E-mail: phuleshikshansansthan@gmail.com Web: www.phuleshikshansansthan.org.

आजीवन सदस्यता फॉर्म

मैं महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ।
मैं अपनी आजीवन सदस्यता राशि रु. 3000/- शिक्षादान की राशि रू. 11000/-स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, रोहिणी कोर्ट ब्रांच, दिल्ली
IFSC कोड नं. SBIN/0010323 के करन्ट एकाउंट नं. 32240494101 में जमा कर काउन्टर स्लिप संलग्न कर रहा/रही हूँ।

मेरी जानकारी निम्नानुसार है :-

1. नाम _____
2. पिता/पति का नाम _____
3. जन्म तिथि _____ 4. ब्लड ग्रुप _____
5. शिक्षा _____
6. व्यवसाय _____
7. वोटर कार्ड नं. _____ 8. ड्राईविंग लाइसेंस नं. _____
9. आयकर पेन कार्ड नं. _____ 10. आधार कार्ड नं. _____
11. स्थायी पता _____
_____ पिन कोड _____
12. पत्र व्यवहार का पता _____
_____ पिन कोड _____
13. फोन/फैक्स नं. _____ 14. मोबाईल नं. _____
15. ई-मेल _____

Passport Size Photo

दिनांक: प्रभारी के हस्ताक्षर (कोड नं.) आजीवन सदस्य के हस्ताक्षर

कार्यालय उपयोग हेतु

श्री..... ने रसीद नं. ..... दिनांक ..... से रु. 3000/- जमा करा दिए है।

सदस्यता कोड नं.: आजीवन सदस्यता प्रदान की जाती है। अध्यक्ष कोषाध्यक्ष

3 जनवरी सावित्रीबाई फुले का 189वां जन्म दिवस पर प्रकाशनार्थ

नारी मुक्ति दात्रि सावित्रीबाई फुले

प्रत्येक मानव अपनी माँ के गर्भ से जन्म लेने तक किसी जाति धर्म वर्ण का नहीं होता है। वर्तमान में जहाँ जन्म होता है, उस परिवार की जाति धर्म वर्ण का स्वतः बन जाने की परम्परा हैजब तक जाति धर्म वर्ण नहीं थे, तब तक मानव केवल स्त्री एवं पुरूष ही होते थे। इसलिए यह स्वंय सिद्ध है कि जाति –धर्म,वर्ण जीवन जीने की कला मानव निर्मित है, किसी भी ईश्वर पीर–पैगम्बर, खुदा, ईसा इनके उत्पत्ति कर्ता नहीं है, और ये भी मानव की मान्यता के आधार पर ही भावनात्मक रूप से स्वीकार्य है। कहते है अल्ला–ईश्वर एक ही आदर्शवाद के द्योतक है। लेकिन मानव बुद्धि जैसे जैसे विकसित होती गई अनेक प्रकार की मान्यता स्थापित होती रही है। इन्हीं परिवेश में सरकार निराकार की मान्यता प्रचलित है।

अठारहवीं सदी तक अनेक मान्यता स्थापित हो जाने के कारण भारतवर्ष में बुद्ध के बाद देश में सनातक धर्म अपनाया विदेशियों के ओ के बाद दुसरे धर्म में जातियों की पहचान बनती गई इसी कारण टकराव भी होते रहे।

महात्मा जोतीराव फुले 1827 एवं सावित्रीबाई फुले (3.01.1831) के कार्यकाल तक जाति, वर्णवादी व्यवस्था एवं धार्मिकता की जड़े मानव के लिये मजबूती से जकड़ी हुई थी।

सनातन धर्म में इन महापरूषों का जन्म हुआ था। सावित्रीबाई फुले का 3 जनवरी 1831 को सतारा जिला के नायगांव के मुखिया नेवसे पाटिल खण्डोजी पाटिल के यहाँ हुआ। बचपन से ही प्रखर बुद्धि की सावित्री के जीवन के उतार चढ़ाव की अनुभूति होती रहीसावित्रीबाई का 1840 में जोतीराव फुले से विवाह हुआयह फुले दम्पत्ति अपने स्वतंत्र, वैज्ञानिक आधारों को मानने वाली तत्कालिन परिवेश में अनेक संकटों का मुकाबला करते हुए मानव कल्याण के महान कार्यों समाज सेवा में अपना इतिहास रचते रहे।

सावित्रीबाई जो कि माली परिवार की होने से ब्रह्मणवादी व्यवस्था में टक्कर लेने वाली देश की पहली नारी बनी उनके पति जोतिराव ने उन्हें शिक्षित किया, और पहला कन्या विद्यालय भिडे वाडा पूना में स्थापित कर दिया जिसमें केवल चार लड़कियों ब्रह्मण, एक धनगर (गड़रिया) और एक मराठा जाति की याने कुल छः लड़कियों से विद्यालय 1 जनवरी 1848 को प्रारम्भ कर ब्रह्मणवादी व्यवस्था को चुनौति देदी । और इतना ही नहीं फुले दम्पत्ति ने कुल 18 विद्यालय प्रारम्भ कर दिये जिसमें सभी वर्गों के छात्र छात्राएं शिक्षित होने लगे इस प्रकार शैक्षणिक क्रान्ति का देश में आगाज हो गया।

फुले दम्पत्ति ने तत्कालिन घिसी–पीटी रीति–रिवाजों की परम्परा पर भारी चोंट की सती प्रथा रोकने शूद्रों की शिक्षा प्रारम्भ करने, अस्पृश्यता, असामनता, अंधभक्ति, कुरितियाँ समाप्त करने, विधवा आश्रम खालेने विधवा पुर्नविवाह प्रारम्भ करने, विधवा प्रसूतिगृह खोलने, जन्म से मृत्यु तक के संस्कारों को सुविधाजनक, सरलरूप एवं वैज्ञानिक आधारों पर स्थापित करने रात्री शाला, पुस्तकालय, वृद्ध शिक्षा केन्द्र स्थापित कियेमानव सेवा के लिए नई विधि के संस्कार एवं सार्वजनिक सत्यधर्म की स्थापना की। बीमारी में समुचित इलाज कराने की मानव सेवा पद्धति प्रारम्भ की । साहित्य रचना कर अमर इतिहास वर्तमान पीढ़ी के लिये रचा।

सवित्रीबाई ने उदत्त विचार कान्तिदर्शी साहित्य में नारी समता,कुरीतियाँ एवं दलितों द्वार की अमर रचना की जिसमें 1. काव्य फुले (1854) 2. बावनकशी सुबोध रत्नाकर (काव्यसंग्रह)। 3. मातुश्री सावित्रीबाई के भाषण और गाने–विषय उद्योग व विद्यादान (1891) 4. जोतीराव फुले के भाषण भाग 1 से 4 तक 15. सावित्रीबाई फुले के विविध विषयों पर भाषण 6. सावित्रीबाई द्वारा जोतीराव फुले को लिखे गये दो पत्र । इस प्रकार वे लेखक क्रान्तिकारी कवियित्री भी थी वास्तव में शिक्षा की महान देन सावित्रीबाई फुले की ही वास्तविक है।

आज के परिवेश में हम जिन झाझावत में उलझते जा रहे है इनसे मुक्ति पाने के लिए फुले दम्पत्ति का जीवन उनके कार्य उनका साहित्य को पढ़–समझकर अपना सुखमय समृद्धि पूर्वक जीवन जी सकते हैइनकी जीवनी से प्रेरणा लेकर परोपकार मानव सेवा के आयाम स्वंय बना सकते है।

आज महिलाओं को सावित्रीबाई फुले का शुक्रगुजार होना चाहिए, जिससे वे वर्तमान मुकान हासिल कर सकी है और अपनी पीढ़ीयों का उन्मुक्त जीवन का स्वर्णिम इतिहास बना सकती है। यदि सावित्रीबाई इतने झंझावतों से झूझकर अमर हो सकी है तो हमें भी फुले दम्पत्ति के प्रति आभार मानना ही चाहिए । उनके आदर्श– अपनाना चाहिए उनपर चलाना चाहिए ।

सावित्रीबाई प्लेग की मरीज को अपने कन्धे पर लादकर इलाज कराने लाई, जिसमें उन्हें भी बीमारी हो गई और 10 मार्च 1897 उनका परिनिर्वाण हुआ ।

हम उनकी इन महान देन पर नतमस्तक हैअमर रहे सावित्रीबाई फुले।

जय ज्योति– जय क्रान्ति

रामनारायण चौहान

MiSSiON®
DRY CHARGE BATTERY
Long Way...
Long Life...
Extra Power & Longer Life
High Performance
Very Low Maintenance
Balaji Storage Batteries Ltd.
85, Madho Bihari Ji Ka Ahatha
Station Road, Jaipur
Phone : 0141-2377335
Mobile : 88750-07771, 88750-07773
E-mail : missionrsbl@yahoo.com
balajibatt@gmail.com
MiSSiON
Automotive Battery ▪ Inverter Battery ▪ Tubular Battery ▪ Solar Battery

युग पुरुष महात्मा जोतिराव फुले

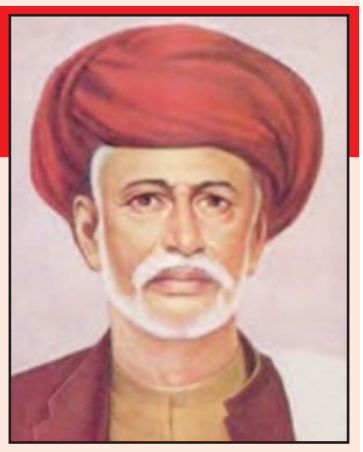

जोतीराव और सावित्रीबाई की कोई संतान नहीं थी, लेकिन उन्होंने कुछ अनाथ बच्चों को घर में लाकर रखा था और उनके लालन–पाल्न का भार उठाया था। सावित्रीबाई उन दीन बच्चों का माँ की ममता से पालन–पोषण करती थीं।

आधी रात के समय वे दो गुप्तघाती छुरा और तलवार लेकर जोतीराव के घर में घुसे। जोतीराव अनाथ बच्चों को पहलू में लेकर सोये हुए थे। जब वे हत्यारे जोतीराव के पास जाने लगे, तो किसी वस्तु के टकराने से आवाज हुई और उससे जोतीराव जाग गये। उन्होंने दीये की रोशनी तेज कर दी और उनसे कहा, ''भाइयों, आप लोग गलत स्थान में आये हैं। यह एक गरीब का घर है, यहाँ आपको कुछ नहीं मिलेगा।'' इस पर एक ने उदंडता से कहा, ''हम चोर–डाकू नहीं है। हम हत्यारे हैं, और आपके प्राण हरण करने आये है।''

''पर मेरी हत्या करने से तुम लोगों को क्या लाभ होगा?''

''इस काम के लिए हमें एक–एक हजार रूपया मिलेगा।''

इस बीच सावित्रीबाई जागीं और हत्यारों को देख घबराकर जोतीराव के पास आ खड़ी हुईं। जोतीराव बोले, ''सावित्री, चिल्लाना मत। कहीं बच्चे जाग न जाएँ। मेरी हत्या करने पर इन दोनो को एक–एक हजार रूपया मिलने वाला है। अच्छा है। इन बेचारों के बच्चे तो सुख से जी सकेंगे। हम भी तो यही कोशिश करते हैं कि ऐसे दीन–दरिद्रों को सुख मिले। चलों भाइयों, जल्दी से अपना काम पूरा कर डालो। मेरे लिए इससे बढ़कर खुशी की बात क्या हो सकती है कि जिनकी उन्नति के लिए मैं प्रयत्नशील हूँ, उन्हीं के हाथों मेरी मृत्यु हो।''

सावित्रीबाई बोलीं, ''ये आपकी जान लेने पर उतारू है और आप चुपके से अपने बलिदान के लिए तैयार है?''

जोतीराव बोले, सावित्री, लहुजी ने मुझे गतकाफरी का प्रशिक्षण दिया दुष्टों के निर्दलन के लिए, लेकिन ये दुष्ट नहीं, जरूरतमंद हैं। सावित्री, मेरे मरने के बाद भी मेरा काम जारी रखना, अछूतों के बच्चों को पढ़ा–लिखाना। भाइयों, तुम्हारे बच्चे पाठशाला जाते हैं या नहीं? यदि न जाते हों, तो उन्हें कल से पढ़ने भेजो ताकि कम से कम उन पर तो पैसे के लिए किसी की हत्या करने की नौबत न आए।''

जोतीराव की बातें सुनकर संगदिल हत्यारे पिघल गये। उन्होंने अपने शस्त्र दूर फेंककर जोतीराव के चरण छूये और बोले, ''आप देवता हैं। आपको मारने का ठेका लेकर हमने बड़ा पाप किया है। इस पाप से मुक्त होने के लिए अब हम उन लोगों को मार डालेंगे, जिन्होंने हमें रूपये का लालच देकर आपकी हत्या करने को बाध्य किया था।''

जोतीराव ने दोनों को गले लगाया। वे बोले, ''भाइयो, तलवार–छुरे से आदमी मर जाएँगे, लेकिंन हम आदमियों को मारकर अपना जीवन नहीं बदलेंगे, अपना जीवन बदलने के लिए तो हमें अज्ञान की हत्या करनी होगी।''

आगे चलकर जोतीराव ने दोनों हत्यारों को सुशिक्षित बलशाली बनाया। धोंडिबा कुंभार महापंडित बन गया। उसने वेद–शास्त्र–निपुण बनकर शृंगेरी मठ के शंकराचार्य को वादविवाद में हराया। शंकराचार्य ने उसे अजेय घोषित कर ''पंडितराव'' की उपाधि से गौरवान्वित किया। इसी धोंडिबा ने आगे जाकर ''वेदाचार'' शीर्घक ग्रंथ की रचना की। धोंडिबा रोडे जोतीराव का शरीर–रक्षक बना।

जोतीराव की पाठशालाएँ कार्यकारी मंडल की देखरेख में अच्छे ढंग से चल रहीं थीं। पाठशालाएँ संस्था के अधीन होने से उनका कामकाज बहुमत से चलने लगा। जोतीराव के कई सहयोगियों की राय थी कि शूद्रातिशूद्रों को केवल पठन–पाठन और गणित सिखाया जाए जबकि जोतीराव चाहते थे कि उन्हे ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे अच्छे–बुरे, हिताहित की परख कर सकें। थोडे दिनों बाद वे शिक्षा–संस्था से अलग हो गये और उन्होंने अन्य सामाजिक कार्यों में हाथ डाला।

4. समकालीन समाज सुधारक

पेशवाओं के कार्यकाल में जो लोग रणभूमि में वीरता से लड़ते, धन–सम्पत्ति का अर्जन करते या कूटनीति के रूप में ख्याति प्राप्त करते वे ही समाज के नेता बन जाते थे, लेकिन अंग्रेजी राज्य के आगमन के बाद कूटनीतिज्ञों और प्रशासकों की अगुआई की परंपरा समाप्त हो गई। अंग्रेजी शासन और पश्चिमी शिक्षा का राजनैतिक और समाजिक विचार प्रणालियों पर बड़ा असर हो रहा था। इससे नवशिक्षा से प्रभावित पंडितों, देशभक्तों तथा समाज सुधारकों की नई उदीयमान पीढ़ी पुरानी पीढ़ी का स्थान ले रही थी। इस नई पीढ़ी के महत्वपूर्ण समाज सुधारक निम्नानुसार थे–

श्री बालशास्त्री जांभेकर (सन् 1812–1846)

अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त कर आधुनिक दृष्टिकोण से विचार करने वाले, पहली पीढ़ी के मुख्य प्रतिनिधि श्री जांभेकर थे। ये मराठी, संस्कृत तथा अंग्रेजी के विद्वान थे। साथ ही इन्होने कई नये पुराने शास्त्रों का अध्ययन किया था। इनका जन्म रत्नागिरि जिले की राजापुर तहसील में स्थित पोंबुर्ले नाम गाँव में हुआ था। ये पश्चिम भारत के पहले प्राध्यापक थे। सरकारी नौकरी में पदोन्नतियां प्राप्त कर ये शिक्षा–निरीक्षक बने। 1845 में ये अध्यापनशास्त्र विद्यालय के प्रधानाचार्य बन गये। ये महाराष्ट्र की पत्रकारिता संस्था के जनक थे। इन्होंने 6 जनवरी 1932 को पहला मराठी पाक्षिक पत्र ''दर्पण'' निकाला। यह मराठी अंग्रेजी विभाग का संपादक किया करते थे, मराठी विभाग के संपादन कार्य का भार श्री विट्ठल गोविंद उर्फ भाऊ महाजन पर था। इनकी पक्की धारणा थी कि शिक्षा ही आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक विकास का साधन है। इन्होंने ज्ञान प्रसार और ज्ञान सारधना को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था। ये पुरानी परंपरागत विद्या का समर्थन किया करते थे, पर साथ ही नये ज्ञान तथा विचारों को ग्रहण करने को सदैव उद्यत रहा करते थे। इनकी स्पष्ट धारणा थी की आसपास की स्थिति के बदलते ही पुराने विचारों को त्याग कर नये प्रगततिशील विचारों को आत्मसात करना आवश्यक है। इसी विचार को लोगों तक पहुँचाने के लिए इन्होंने पाक्षिक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया। अपने ज्ञान प्रसार और सामाजिक जागरण के कार्य में इन्होंने बंगला विद्यावानों का आदर्थ अपनाया था। इनमें संकीर्णता लेशमात्र भी नहीं थी, लेकिन ये नियमित धर्मपालन में कभी रूकावट नहीं आने देते थे। इनकी राय थी कि शासन के व्यवहारों और शिक्षा व्यवस्था में सरकार को धार्मिक तटस्थता का पालन करना चाहिए, धार्मिक शिक्षा भी आवश्यक है, पर वह उत्तरदायित्व समाज का है। साथ ही ये कहा करते थे कि हमारा सामाजिक जीवन धर्म पर आधारित है और यदि धर्मश्रद्धा ही नष्ट हो गई, धर्मग्रंथो का विश्वास ही जाता रहा, तो लोगों के आचराण पर कोई अंकुश नहीं रहेगा। इस प्रकार इन्होंने शासन व्यवहार में धर्मनिरपेक्षता के आग्रह परंतु सामाजिक व्यवहार में धर्मवर्चस्व के समर्थनकी दोमुहा नीति अपनाई थी।

अपने साप्ताहिक पत्र में ये लोगों की शिकायतों तथा पीड़ाओं को स्थान देकर उनकी ओर सरकार का ध्यान दिलाया करते थे। इनके मन पर पुराने रूढ़िवादी धर्म का संस्कार हुआ था, इसलिए ये नारी शिक्षा, बालविवाह, पुनर्विवाह आदि जैसी समस्याओं पर विचार करते समय धर्मशास्त्र पर निर्थर रहा करते थे। फिर भी इनकी परिपक्व बुद्धि, शैक्षणिक क्षेत्र का ऊँचा कार्य, प्रखर देशाभिमान, इतिहास, अनुसंधान का कार्य और अपूर्व स्मरणशक्ति आदि का समकालीन पीढ़ी पर पड़ा प्रभाव था।

श्रीगोविंद विट्ठल उर्फ भाऊ महाजन (1815–1890)

ये प्रगतिशील विचारधारा के श्रेष्ठ देशभक्त थे। ये श्री जांभेकर के ''दर्पण'' पाक्षिक पत्र के मराठी विभाग के संपादक थे। इनकी छात्रावस्था में हुई प्रगति श्री जांभेकर की तरह ही सराहनीय थी। जब ये महाविद्यालय में पढ़ रहे थे, तब 1841 में इन्होंने ''प्रभाकर'' नामक मराठी साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया। इसके आलावा 1840 में प्रकाशित होने वाले श्री राघोबा जनार्दन गव्हाणकर के 'दिग्दर्शन' नामक प्रथम मराठी मासिक पत्र में भी ये लिखा करते थे। आगे उन्होंने उस पत्र को खरीद लिया। कुछ दिनों बाद ये साप्ताहिक ''धुमकेतु'' और त्रैमासिक ''ज्ञानदर्शन'' भी निकालने लगे।

श्री जांभेकर और श्री महाजन दोनों ने हिंदू समाज के झूठे पूर्वाग्रहों तथा अज्ञान पर कुठाराघात किये। साथ ही इन्होंने विधवा विवाह के पक्ष में लेखन किया और समाज सुधार के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करने का प्रयास किया।

क्रमशः

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान की गतिविधियों की झलकियां

दिल्ली। महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के महासचिव रामनारायण चौहान को चित्र भेंट करते हुए जीएल सैनी, राम सिंह सैनी, इंदरा सैनी, राजेश सैनी ।

आदिलाबाद (तेलंगाना)। महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के सुकुमार पेटकुले द्वारा प्रकाशित पुस्तक का विमोचन।

भोपाल । महात्मा फुले चौराह पर समाज के अध्यक्ष जी.पी.माली एवं अन्य पदाधिकारी।

यवतमाल (महा.)। महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के रामलाल कच्छावा, रामनारायण चौहान, शंकरराव लिंगे व अन्य।

चंडीगढ़ । समाज के प्रधान हरजीत सिंह लोंगिया व अन्य सावित्री बाई फुले जयंती पर

इंदौर। वरिष्ठ समाजिक कार्यकर्ता कमल वरोलिया द्वारा प्रकाशित पुस्तक का विमोचन।

THE WOMAN WHO MENTORED THE PHULE

PAMELA SARDAR

Jotirao phule was just an infant, when his mother chimnabai died. His grief-stricken father was worried about the little Joti. He decided to reman single and take care of the child but it was beyond him to play both father and mother to the little one. In his helplessness, he looked towards a cousin of his, Sagunabai, who was a child widow. This compassionate and intelligent womancame into Joti's life like a godsend and played the part of his mother and mentor. She spotted the extraordinary sensitivity and brilliance of the young Joti, and became deeply attached to him. A special and deep bond developed between them. A devout and supremely selfless person, she somehow knew in her heart of hearts that this boy was special, not for the family only but for whole of society.

She had great expectation from her Joti. From very early days, she instilled in him ennobling human qualities through her words and deeds, and constantly encouraged him to read and constantly encouraged him to read write, and something worthwhile for society-very unusal thingh things, considering the social background and conservative thinking of his father Govindrao, who wanted Joti to carry on the family's farming work. It was Sagunabai who insisted on, and succeeded in, enrolling Joti to a good school-a move that was being opposed by the society at large. And, when Govindrao thought of marrying his son, it was she who saw in Savitri an ideal match for Joti, and arranged their marriage. Sagunabai was very fond of Savitri as well, treating her like a dear daughter. She not only gave the Young couple unconditional love and affection, but also steeled their resolve at crucial moments in their life in the face of great adversities. In her uniquely measured and dignified way, she mothered and mentored Joti and savitri for the great revolutionary work that laid ahead.

In their trun, Joti and Savitri also bore unbounded love and gratitude for their Aau-Maa(aunt-mother), as they lovingly called her. They knew and appreciated her worth, and gratefully acknowledge her as the greatest and most ennobling influence in their life. Had there been no Sagunabai in their life, Perhaps their life would have been very different perhaps there would have been no phule phenomenon, as we know it today.

Cont. Next Month

क्या आप जानना चाहोगें ?

वास्तव में असली मानव जीवन का आन्नद लेना है तो सभी अपने बच्चों को शिक्षित–उच्च शिक्षित–प्रशिक्षित करवायें जैसा कि गोविंदराव फुले ने अपने लाड़ले बेटे जोतीराव को और जोतीराव ने अपनी पत्नि सावित्रीबाई फुले को शिक्षित कर नारी उत्थान का मार्ग प्रशस्त कर अमर बनाया । समझे थोड़ा सा प्रसंग :–

जोतिराव की शिक्षा

जोतिराव एक वर्ष के भी नहीं हुए थे कि उनकी माता चिमणाबाई का निधन हुआ। गोविन्दराव पर तो जैसे दुख का पहाड़ टूट पड़ा। उस समय की रूढ़ि के अनुसार मित्रों और सगे–संबंधियों ने गोविंदराव को दूसरा ब्याह करने की सलाह दी, लेकिन गोविंदराव ने सोचा, ''क्या एक सौतेली माँ मेरे बच्चों को भी सगी माँ की ममता, प्रेम दे सकेगी?'' उन्होंने बहुत दिनों तक इस पर सोंचा, लेकिन इस प्रश्न का उत्तर शायद उन्हें ''ना'' में मिला, इसलिए उन्होंने दूसरे ब्याह की बात मन से निकाल दी। गोविंदराव का यह निर्णय उस जमाने में सचमुच ही अनोखा और सराहनीय था, जब पुरूष की 2.2, 4.4 पत्नियां हुआ करती थीं। उन्होंने अपने बच्चों के पालन–पोषण के लिए जोतीराव की मौसेरी बहन श्रीमती सगुणबाई क्षीरसागर को नियत किया। वे बाल–विधवा थीं और जॉन नामक इसाई पादरी के यहां अनाथ बच्चों की देखभाल का काम किया करती थीं। उन्होंने बड़ी ममता और अपनेपन से जोतीराव और राजाराम का पालन किया और उन्हें कभी माँ की कमी महसूस नहीं होने दी।

समय गुजरता गया और जोतिराव छः वर्ष के हुए, वे मजबूत डीलडौल वाले तथा सशक्त बालक थे। उस समय की नीति के अनुसार ऊँची जातियों को छोड़कर अन्य जातियों को शिक्षा का अधिकार ही नहीं था, इसलिए गोविंदराव स्वयं पढ़े–लिखे तो नहीं थे, लेकिन उन्होंने बहुत सोच–विचार कर जोतिराव को पढ़ाने का निर्णय किया।

आज जिसे शिक्षा कहा जाता है, वह जोतिराव के पूर्व अस्तित्व में नहीं थी। कुछ शास्त्री ऐसे स्थलों में निजी पाठशलाएं चलाते थे, जहाँ ऊँची जातियों के लोग बड़ी संख्या में रहते थे। उन पाठशालाओं में संस्कृत, व्याकरण न्यायशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, वेदांत, ज्योतिष, धर्मशास्त्र जैसे विषय पढ़ाये जाते थे। समाज की कनिष्ठ जातियों को शिक्षा का अधिकार ही नहीं था, तब उनके बच्चों को शिक्षा देने का विचार ऊँची जातियों के लोगों के मन में क्यों आता? कुछ देहातों में प्राथमिक शिक्षा देने वाली पाठशालाएँ हुआ करती थीं, लेकिन उनमें केवल व्यापारियों तथा धनवानों के पुत्रों को ही शिक्षा दी जाती थी। उस शिक्षा का उद्देश्य केवल लिपिक का काम सिखाना या महाजनी करने के लिए आवश्यक बातों का ज्ञान दिलाना था।

अंग्रेजों ने सार्वत्रिक शिक्षा–प्रसार को सरकार का दायित्व माना था। शासन की सुविधा के लिए उन्हें ऐसे कर्मचारियों की आवश्यकता थी जो उनकी देखरेख में विशेष रूप से शिक्षा प्राप्त करें। इसलिए उन्होंने कुछ महानगरों में पाठशालाएं खोलकर लोगों को शिक्षा दिलाने का कार्य आरंभ किया। इन पाठशालाओं के द्वारा सैद्धांतिक रूप से तो सभी जातियों के बच्चों के लिए खुले थे, लेकिन यथा संभव उनमें ऊँची जातियों के बच्चो को प्रवेश दिया जाता था। अंग्रेजों को डर था कि यदि सरकारी पाठशालाओं में कनिष्ठ जातियों के बच्चे अधिक संख्या में आ जाएं, तो एक तो ऊँची जातियों के लोग अपने बच्चों को इन पाठशालाओं में नहीं भेजेंगे और दूसरे, यदि कनिष्ठ जातियों के लोग शिक्षा प्राप्त करके आगे आ जाएं और वे शासन के अधिकार पद प्राप्त करें, तो अंग्रजी शिक्षा और शासन का दबदबा नहीं रहेगा क्योंकि कनिष्ठ वर्गों को समाज में सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। इसलिए शासन के अधिकारियों ने स्पष्ट निर्देश जारी किये थे कि सरकारी पाठशालाओं में धनवान और सम्मानित समाज के बालकों को प्राथमिकता से प्रवेश दिया जाए। सरकार द्वारा शिक्षा के लिए मंजूर की गई राशि बहुत कम थी और तत्कालीन सरकारी शिक्षा परिषद के सदस्यों की राय थी कि निधि कि पर्याप्त न होने से शिक्षा प्रसार का कार्य विस्तृत मात्रा में नहीं किया जा सकाता। इसलिए उस परिषद् ने कनिष्ठ वर्गों में शिक्षा प्रसार के लिए विशेष प्रयास नहीं किये। परिषद् के एक कट्टरपंथी सदस्य श्री धाकजी दादाजी परभू ने परिषद् के अन्य सदस्यों को मनाकर एक संकल्प पारित करा लिया कि शिक्षा परिषद् की पाठशालाओं में कनिष्ठ वर्गों के सभी छात्रों को पाठशालाओं से निकाल दिया जाए और यदि ऐसा नहीं किया गया तो, हम अपने बच्चों को इन पाठशालाओं में नहीं भेजेंगे। इससे ऊपर की कक्षाओं में गये हुए और पढ़ने में तेज बच्चों को केवल कनिष्ठ वर्गो के होने के कारण, सन् 1826 में निकाल दिया गया, लेकिन यह प्रतिबंध बहुत दिन तक टिक नहीं सका।

सन् 1821 में सरकार ने पुणे में एक हिन्दू कॉलेज खोला जिसे संस्कृत पाठशाला कहा जाता था। उसमें सन् 1851 तक ब्राह्मणों को छोड़ अन्य जातियों के छात्रों को प्रवेश नहीं दिया जाता था। आगे चलकर इस पाठशाला का रूपांतरण 'पुणे' कॉलेज' में हुआ और फिर उसमें सभी जातियों के छात्रों को प्रवेश मिलने लगा।

''बॉम्बे नेटिव एजुकेशन सोसाइटी'' पहली संस्था थी जो भारत में संगठित रूप से शिक्षा प्रसार करने के उद्देश्य से स्थापित हुई थी। इस संस्था ने सन् 1820 में पाठशालाएं खोलीं। सन् 1833 में पुणे में ईसाई पादरियों की 2–3 पाठशालाएं थीं। बम्बई सरकार ने 1825 में अपने खर्च से कुछ जिला स्थानों में पाठशालाएं खोलीं। आगे चलकर सन् 1840 में ''बाम्बे नेटिव एजुकेशन सोसाइटी'' और सरकारी पाठशालाओं का एकत्रीकरण करके ''शिक्षा परिषद्'' का पुनर्गठन किया गया।

इस संक्रमणकाल में सीमित मात्रा में कनिष्ठ जातियों के छात्रों के लिए शिक्षा के द्वार खुलते देखकर कुछ समझदार तथा दूरदर्शी लोगों ने अपने बच्चों को पाठशालाओं में भर्ती कराया। इन बच्चों में जोतीराव भी थे। तब वे सात वर्ष के थे।

उस समय भारत में एक विवाद छिड़ गया था। एक दल का आग्रह था कि भारतीयों को अंग्रेजी माध्यम से पश्चिमी शिक्षा दी जाए, तो दूसरे दल की मांग थी कि देशी भाषा में पौर्वात्य शिक्षा दी जाए। उस समय के विधि मंत्री और सरकारी शिक्षा समिति के अध्यक्ष अंग्रेजी महापंडित थॉमस मेकाले ने सन् 1835 में एक टिप्पणी में यह लिखकर इस विवाद को समाप्त कर दिया कि भारतीयों को अंग्रेजी माध्यम से पश्चिमी शिक्षा दी जाए। आगे चलकर लॉर्ड बेंटिंग की सरकार ने निर्णय लिया कि भारतीयों में यूरोपीय साहित्य और शास्त्रों का प्रचार करना ही सरकार का उद्देश्य होना चाहिए।

इस परिस्थिति में जोतीराव पाठशाला गये और उन्होंने पढ़ाई में अच्छी प्रगति की। वे एक तेज, होशियार और समझदार थे। वे लिखना पढ़ना सीख गये और हिसाब भी करने लगे। जोतीराव की प्रगति से जलकर गोविंदराव की दुकान में काम करने वाले एक ब्राह्मण लिपिक ने उनके कान भर दिये। वह बोला– ''आप अपने बेटे को पढ़ा तो रहे हैं, लेकिन उसकी शिक्षा का क्या उपयोग है? पढ़ने के बाद तो वह न घर का रहेगा, न घाट का। न वह खेती के काम के लायक रहेगा और न ही आपके बुढ़ापे में इस व्यवसाय का बोझ उठा पाएगा। दूसरी बात यह कि सात समुंदर पार से ये अंग्रेज यहां आये हैं, यह क्या सिर्फ राज्य करने के लिए आये हैं? वास्तव में वे शिक्षा देकर तुम शूद्रो को ईसाई बनाना चाहते हैं। इसीलिए तो उन्होंने यहां पाठशालाएं खोली हैं। भला उनको आपकी भलाई से क्या लेना देना! एक तो आपने जोतीराव को पाठशाला भेजकर धर्म के विरूद्ध कार्य किया है और दूसरे, यदि जोतीराव शिक्षा प्राप्त करके समझदार बन भी जाए और अंत में ईसाई बन जाए, तो आपकी सात पीढ़ियां नरक में चली जाएंगी।''

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक लगभग सभी ब्राह्मण अध्यापक अन्य जातियों के छात्रों को इसी प्रकार की स्वार्थी सलाह देकर उन्हें हतोत्साहित किया करते थे, क्योंकि ऊँची जातियों के लोगों को डर था कि कहीं कनिष्ठ जातियों के लोग पढ़–लिख जाएँ तो वे हमारी नौकरियों तथा व्यवसायों में साझीदार बन जाएंगे और बहुत–सी नौकरियां उनके हाथों में चली जाएगी। कनिष्ठ जातियों की लिखने–पढ़ने में बढ़ती रूचि को देखकर ब्राह्मण शोर मचाने लगे ''कलजुग आ गया, शिक्षा शूद्रों के घर गई।''

भोले स्वभाव के गोविंदराव लिपिक की बातों में आ गये। उन्होंने जोतीराव को पाठशाला से निकाल दिया। तब तक जोतीराव चार वर्ष की शिक्षा ग्रहण कर चुके थे। पाठशाला से निकाले जाने के बाद जोतीराव के हाथ से बस्ता–कलम छूट गये और उनके स्थान पर कुदाली–खुरपी जैसे खेती के औजार आ गये। वे अपने पिता की फुलबाडियों और खेतों में काम करने लगे। उन्हें खेतों तथा बगीचों में दिन भर खटते हुए देखकर गोविंदराव संतुष्ट हो जाते थे।

इस प्रकार प्रत्येक मानव को शिक्षित होकर अपने परिवार को शिक्षित कर मानव जीवन का आंनद लेने लायक बनाना ही । महात्मा फुले का आदर्श पर चलाने का मार्ग प्रशस्त्र हो सकता है। सौंचिये जरा सौंचिये।

- रामनारायण चौहान

देश भर के समाचार

संकलन
रामलाल कच्छावा
कोषाध्यक्ष

● किशनगढ़ (राज.)– 6 दिसम्बर को ज्योतिबा फुले छात्रावास भवन का शिलान्यास माली सैनी समाज द्वारा हुआ। छोटू मालाकार ने उक्तजानकारी दी। शिलान्यास के लिए के लिए किसनगढ़ समाज को बधाई।

● जैतारण (राज.)– 8 दिसम्बर को माली सैनी समाज छात्रावास में विकास समिति द्वारा प्रतिभा सम्मान हुआ। तुलसाराम पंवार, चतराराम भाटी, चेनाराम गेहलोत, मदनलाल भाटी, चन्दराराम भाटी, भणाराम गहलोत, मांगीलाल भाटी ने आभार प्रकट किया।

● अलवर (राज.)– जिला सैनी सभा द्वारा समाज के पार्षदों का 8 दिसम्बर को सम्मान हुआ। पूरणमल सैनी अध्यक्ष जितेन्द्र खुराडिया युवा अध्यक्ष ने बताया कि इस अवसर पर छात्र संगठन इकाईयों की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह के अतिथि थानागाजी नगर पालिका अध्यक्ष चौथमल सैनी आदि अतिथियों ने किया। लक्ष्मणसिंह सैनी, सीताराम सैनी, कमल सैनी, सुनील सैनी, प्रेम कपूर सैनी, पदम सैनी, प्रकाश सैनी, लक्ष्मीनारायण सैनी ने आभार प्रकट किया।

● जयपुर (राज.)– जयपुर जिला माली (सैनी) समाज का 27 वें सामूहिक विवाह समारोह 25 फरवरी को संस्कार मैरिज गार्डन स्वेज फार्म सोडाला में आयोजित होगा। 15 दिसम्बर को द्वित्तिय युवक युवति परीचय सम्मेलन का आयोजन हुआ सम्पर्कः– ओम रजोरिया 9251301342ए रोशन सैनी 9828543888 श्रीमती शीला सैनी 8824845449 शान्ति कुमार सैनी 9828135108 सुरेश सैनी 9887711500

● रोहतक (हरि.)– शूटर काजल सैनी ने नेपाल 13वाँ एशियन गेम्स में दो मेडल जीते।

काजल एक महिने में चार इन्टर नेशनल मेडल जीत चुकी है।

सैनी सोसाइटी के पूर्व प्रधन विजय सैनी की सुपुत्री ने देश का नाम आये बढ़ाया। बधाई।

● उज्जैन (म.प्र.)– फूल माली समाज का प्रदेश स्तरीय तृत्तीय युवक–युवति परीचय सम्मेलन 2 फरवरी/ सम्पर्क– 9926726502।

● चालीसगाँव (महा.)– सत्यशोधक माली समाज द्वारा 19 जनवरी को वर–वधु परीचय सम्मेलन आयोंजीत। सम्पर्क भीमराव हरि खसागे 9423186263।

● ब्यावरा (मप्र.)– फूल माली समाज नवयुवक संघ द्वारा राजगढ़ एवं गुना जिला द्वारा 9वाँ जिला स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि जयवर्धन सिंह मंत्री, गोर्वधन सिंह दागी विधायक, नारायण सिंह आमलाबे द्वारा ब्यावरा में महात्मा जोतीराव फुले प्रतिमा एवं समाज की धर्मशाला के लिये रू10 लाख का सहयोग करने की घोषणा की। उक्त जानकारी समाजसेवी मनोज सारंगपुर, सुरेश सुमन मालाबार पत्रकार ने दी।

● मालपुरा टोंक (राज.)– फूल माली (सैनी समाज द्वारा) छात्रावास बनाने का निर्णय लिया।

● नासिक (महा.)– 29 दिसम्बर को सर्व शाखीय माली समाज द्वारा 17वाँ वधु–वर पालक परीचय सम्मेलन। उक्त जानकारी विनोद नाईक ने दी।

● जोधपुर (राज.)– आर. ए. एस. कोचिंग क्लास सैनी माली आफिसियल संस्थान द्वारा संचालित। बधाई।

● पिण्डवासा– रतलाम–(म.प्र.) – मेवाड़ा माली समाज के भंवरलाल घोलसिया अध्यक्ष सुखलाल मोबिया के मार्ग दर्शन में 15 दिसम्बर को समाज को एकजूट एवं शिक्षित करने हेतु बैठक आयोजित हुई।

● मुरादाबाद (उप्र.)– ग्वालखेड़ा में सैनी सभा के सुरेश सैनी की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में अतिथियों ने शिक्षा का महत्व समझाया व सबको शिक्षित करने का आव्हान किया।

● रामपुर (उप्र.)– सैनी मौर्य शाक्य कुशवाहा महासभा के जिला अध्यक्ष प्रेमपाल सिंह सैनी ने बताया कि आयोजित बैठक में शिक्षा पर विचार किया। एवं प्रतिभाओं को सम्मानित किया।

● राजस्थान– सामूहिक विवाह समिति में निरन्जनलाल सैनी बानासूर, भागीरथ माली, सैनी लीला मण्डा, सीताराम सैनी कुशालगढ़ ने अपने पुत्रों की शादी में नाममात्र रू. एक का दहेज लेकर अनुकरणीय कदम उठाया। बधाई।

● भीलवाड़ा (राज.)– राजसीको के पूर्व चेयरमेन सुनील परिहार का एक समारोह में गोपाल माली पत्रकार ने स्वागत किया।

● औंकारेश्वर (मप्र.)–मारवाड़ी माली समाज पारमार्थिक ट्रस्ट की मिटिंग गजानन्द भाटी की अध्यक्षता में हुई जिसमें समाज की धर्मशाला बनाने का निश्चय किया।

● नारायणपुर (राज.)–महात्मा ज्योतिबा फुले जागृति विकास संस्थान द्वारा 13 वाँ प्रतिभा सम्मान समारोह में रामसिंह सैनी हुकमाराम सैनी के एल. सैनी ने समाज की 300 प्रतिभाओं का सम्मान किया।

● अमरपुरा (राज.)– संत शिरोमणी लिखमीदास महाराज स्मारक विकास संस्थान के समारोह के अध्यक्ष राजेन्द्र गेहलोत पूर्व मंत्री ने 500 प्रतिभाओं को सम्मानित किया।

● दिल्ली– पेसर नवदीय सैनी वनडे खेलने वालों 229 वे खिलाड़ी बने। कटक में उन्होंने 2 विकेट लिया। बधाई।

● हरदा (मप्र.)– श्री क्षत्रिय मारवाड़ी माली समाज समिति नर्मदा संभाग द्वारा आदर्श सामूहिक विवाह सम्मेलन 30 जनवरी को कृषि उपज मण्डी प्रांगण में होगा। सर्म्पक नारायण पटेल अध्यक्ष 9977398898 विनोद भाटी 9926482410, दयाराम भाटी 9826083526,।

● पटना (बिहार)– कुशवाहा कल्याण परीषद का 47वाँ पारिवारिक मिलन समारोह का 22 दिसम्बर को आयोजित। शंकर मेहता अध्यक्ष ने आभर प्रकट किया।

● छिन्दवाड़ा (मप्र.)– मनोज कुमार घोरसे को सहायक प्राध्यादक रसायन शास्त्र की नियुक्ति पर बधाई।

● सतारा (महा.)– 29 दिसम्बर को माली समाज वधू–वर पालक परीचय सम्मेलन। सम्पर्क दशरथ सदाशिव फुले 9823272523।

● प्रभातपट्टन (म.प्र.)– रामजी महाजन स्मृतिमंच द्वारा 31 दिसम्बर को प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान समारोह गुरूदेव सभागृह में हुआ। उक्त जानकारी डॉ. याकूब एवं नारायणराव बंजारे ने दी।

● भोजपुर–आरा (बिहार) – समाजसेवी मदन मोहन भक्त की पत्नि दुर्गावती देवी ;69द्ध का असामयिक निधन शिक्षा इशारा परिवार की और से शोक श्रद्धान्जली।

● जयपुर (राज.)– राजस्थान के विभिन्न नगरों में समाज के राजनेता।

● कविता सुमन (सागोद)– किशोर सुमन (मांगरोल पंचायत पालिका) 3. पायल सैनी सभा पति (बाड़मेर नगर परिषद) बधाई।

● मुम्बई (महा.)– विदर्भ माली संस्था द्वारा 5 जनवरी को वधुवर सम्मेलन। सम्पर्क प्रभाकर सातव– 9221691682।

● थानागाजी (राज.)– चौथमल सैनी नगर पालिका के अध्यक्ष बने।

मथुरा (उप्र.)– महाराजा सैनी पब्लिक स्कूल के संस्थापक एवं सैनी वंश का इतिहास लेखक महाराजा सैनी के जन्म स्थल मथुरा में उनका स्टेचु एवं स्तंभ लगाने वाले प्रधानचार्य, समाज सेवी कप्तान सिंह सैनी का 83 वर्ष की आयु में निधन। श्रद्धांजली।

● दलोदा (मप्र.)– बंशीलाल माली महात्मा ज्योतिराव फुले सागरवंशी माली समाज अध्यक्ष ने बताया कि 3 जनवरी को सावित्री बाई फुले की जंयति पर उनका स्मारक अनावरण का आयोजन किया।

● भोपाल– 22 दिसम्बर को मानस भवन में कुशवाह समाज द्वारा युवक–युवति परीचय सम्मेलन हुआ। उक्त जानकारी राम विश्वास कुशवाहा ने दी।

● चण्डीगढ़ (पंजाब)– सतवीरसिंह सैनी को प्रजाब सरकार ने डिस्ट्रिक्ट प्लानिंग बोर्ड का चेयरमेन नियुक्त किया। बधाई।

● जयपुर (राज.)– जयपुर जिला सैनी समाज द्वारा 5 जनवरी को प्रतिभावन विद्यार्थियों का सम्मान किया। उक्त जानकारी प्रेमलता अजमेरा एड. चंचल सैनी ने दी।

● मुजफ्फर नगर (उप्र.)– नववर्ष पर प्रतिवर्षानुसार समाज का सम्मेलन हुआ। जिसमें आलॅ इंडिया सैनी सेवा समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिलबाग सिंह सैनी, महामंत्री राजकुमार सैनी, वीरेन्द्र सैनी युवा अध्यक्ष प्रदीप सैनी प्रदेश अध्यक्ष ओमपाल सिंह सैनी सहित अतिथियों ने समाज को शिक्षित करने और एकजूट होकर आगे बढ़ने का आव्हान किया।

● इकलेरा माताजी देवास (मप्र) – श्री गुजराती रामी माली समाज द्वारा श्री बिजयासन माता मंदिर प्रांगण में समाज अध्यक्ष नारायण यादव व धर्मशाला उज्जैन अध्यक्ष गिरधारीलाल गौड़ धर्मशाला औंकारेश्वर अध्यक्ष कैलाश वर्मा का सम्मान किया। पुरूषोत्तम परमार ने अध्यक्षता की गजानंद रामी, यशवंत नेहरू, गौरी शंकर परमार आदि उपस्थित थे।

● अमरावती (महा.)– मेलघाट क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाऐं पहुचाने वाला डॉ. आशिष सातव व कविता सातव को केन्द्र सरकार की और से 3 जनवरी को राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान करेंगे।

डॉ. सातव ने एम.बी.बी.एस. व एम.डी की शिक्षा प्राप्त की। हेतु राज्य सरकार ने नाम प्रस्तावित किया जिसे भारत सरकार ने स्वीकार किया। बधाई।

● बलाघाट (मप्र.)– समाज को एकजूट कर महात्मा फुले सावित्रीबाई फुले रामजी महाजन के आदर्शोंअपनाते हुए मध्य प्रदेश सरकार के मंत्री रहे शहीद लिख्राम कावरें की 16 दिसम्बर को 20वीं पुण्यतीथि का आयोजन हुआ। जिससे विधान सभा उपाध्यक्ष हिना कावरे पूर्व विधयक श्रीमती पुष्पलता कावरे सहित बड़ी संख्या में लोगों ने श्रद्धांजली दी।

● नालन्दा (बिहार)– व्ही.पी. सिंह की पुत्री तानू सैनी ने एम.एस. सी. इनवायरमेन्टल साइन्स नालन्दा ओपन युनिवर्सिटी पटना से उत्तीर्ण होनेपर लेक्टि. गर्वनर एवं शिक्षामंत्री बिहार द्वारा गोल्ड मेडल प्रदान किया।बधाई।

● धारूहेड़ा (हरि.)– सावित्रीबाई फुले जंयति 3 जनवरी पर उनकी प्रतिमा का अनावरण सांसद नायबसिंह सैनी द्वारा ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिलबाग सिंह सैनी महामंत्री राजकुमार सैनी आदि अतिथियों ने इस अवसर पर शिक्षा का महत्व पर आव्हान।

● उज्जैन (मप्र.)– श्री गुजराती रामी माली समाज द्वारा 30 को समाज की धर्मशाला नरसिंह घाट में आदर्श सामूहिक विवाह को आयोजन समाज अध्यक्ष नारायण यादव धर्मशाला अध्यक्ष गिरधारीलाल गौड़ बनमाली पत्रिका के गजान्नद रामी, विनोद मकवाना ने आयोजन को सफल बनाने की अपील की।

● गाजियाबाद (उप्र.)– 29 दिसम्बर को आलॅ इंडिया सैनी सभा द्वारा महाराजा शूरसैनी जंयति पर प्रतिभावों को सम्मानित किया। उक्तजानकारी अवनीश सैनी ने दी।

● रायपुर– युवा माली समाज संगठन द्वारा 5 जनवरी को अखिल भारतीय युवक–युवति परीचय सम्मेलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह स्मारिका का प्रकाशन होगा। उक्त जानकारी मुन्नालाल सैनी ने दी।

''हमारी समस्या का समाधान सिर्फ हमारे पास है।

दुसरों के पास तो सुझाव होते है।

महात्मा बुद्ध

भारत की सारी समस्या ब्राह्मणों के विकृत मासिकता के कारण निमार्ण हुई है, और यह राजनीतिक नहीं बल्की सामाजिक और सांस्कृतिक समस्या है।

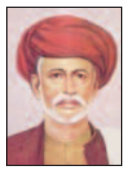

महात्मा फुले

योग्य कृता/कार्य करने के लिये सही सोच की आव यकता होती है और सोच तभी विकासीत होती है जब हम अपने किये जाने वाले कार्य के बारे मे पुरी जानकारी रखते है।

डॉ.भीमराव अम्बेडकर

''निन्दा'' से घबराकर अपने ''लक्ष्य'' को छोड़े क्योकि ''लक्ष्य'' मिलते ही निंदा करने वालों की ''राय'' बदल जाती है।

स्वामी विवेकानंद

हम एक ऐसे समाज में रहते है, जहां सुन्दरता को रंग से देखा जाता है,

शिक्षा को मार्क्स से देखा जाता है और सम्मान पैसा देखकर दिया जाता है ।

डॉ.अब्दुल कलाम

RNI No: DELBIL/2014/60339
Postal Reg. No. : DL(E)-20/5481/2018-20, Publication Date 04-05, Posting Date : 10-11

संस्थान के आजीवन सदस्य

Sh. Ravi Harod E00098/UJJAIN/MP Mo.No. 9827728378	Sh. Shushil Harod E00099/UJJAIN/MP Mo.No. 9827311606	Sh. Mukesh Harod E000100/UJJAIN/MP Mo.No.983081102	Sh. Matadeen Saini E000101/JHUNJHUNU/RJ Mo.No. 9413130548	Sh. M.L. Saini E0000102/ RAIPUR/CG MO.No.9425501499

Sh. Umrao Shankar Kadukar E0000103/GONDIA/MH Mo.No.- 8390642817	Sh. Rajkumar Sonule E000104/GONDIA/MH Mo.No.9158832322	Sh. Dharamraj E000105/GONDIA/MH Mo.No.9421711980	Dr. G.B. Aamkar E000106GONDIA/MH Mo.No.9421709521	Dr. Janak Marathe E000107/BALAGHAT/MP Mo.No.8817979453

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान की गतिविधियों की झलकियां

दिल्ली। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, अधिरंजन चौधरी, सोनिया गांधी, मनमोहन सिंह, राहुल गांधी, गुलाब नबी आजाद, प्रियंका गांधी एक कार्यक्रम में।

दिल्ली। महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के महासचिव रामनारायण चौहान एव रमेश कुमार सैनी कुरुक्षेत्र के सांसद नायब सिंह सैनी के साथ एक समारोह में।

पुणे। महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के पूर्व अध्यक्ष शंकरराव लिंगे व अन्य महात्मा फुले वाडा में।

अकोला (महा.)। महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के महासचिव रामनारायण चौहान कार्यकारिणी सदस्य महेश गणगणे के साथ।

दिल्ली। ऑल इंडिया सैनी सभा के समारोह में महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के जी.एल.सैनी, श्रीचंद सैनी, विधायक एवं अन्य।

रायपुर। महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के एम.एल.सैनी अतिथियों के साथ एक समारोह में स्मारिका का विमोचन करते हुए।

To,
Printed Matter, Bookpost
.....
.....
.....
.....

Licence to Post Without Prepayment postage paid in advance Licence No. U (E)-9/2018-20 Dated : 9/1/2018

If Not Delivered Please Return to

"SHIKSHA ISHARA"
A 103, Taj Appartment, Gazipur Delhi-110096
Contact No. : 09990952171

उससे मैंने तेरी आज्ञा के अनुसार, सत्य का नित् स्मरण कर, व्यवहार किया, यह तू जानता है। इसलिए हे प्रभु! तू मुझे स्वीकार करेगा। ऐसा मुझे पक्का विश्वास है, और इस तरह से जो बाकी सब, मानव भाई-बहन सच्चे आचरण से व्यवहार करेंगे, उनको भी तू निःसंदेह, स्वीकार करेगा। तेरी सत्य सत्ता निरंतर बढ़ती ही रहे।

(महात्मा फुले पृ.स. 520 महाराष्ट्र सरकार का प्रकाशन)

प्रार्थना

प्रभु तुने अंतरिक्ष में अंनत, अनगिनत सूर्यमंडल बनाकर, इस पृथ्वी पर, प्राणी भी बनाये और तुने मुझे भी इंसान बनाकर, मुझमें विवेकशील बुद्धि दी,

मुम्बई । महाराष्ट्र सरकार ने श्री छगन भुजबल को मंत्री बनाये जाने पर नागपुर से गोविंद राव वैराले महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान स्वागत करते हुए।

बधाई

वरिष्ठ समाजसेवी
चौधरी इंदराज सिंह सैनी
का **5 जनवरी** को
जन्मदिन

ये केजरीवाल सरकार ने बनवाया है
ज्योतिबा राव फूले स्मारक वृद्ध आश्रम, वजीरपुर, दिल्ली

शिक्षा इशारा के संस्थापक श्री शंकरराव लिंगे अध्यक्ष, रामनारायण चौहान महासचिव, रामलाल कच्छावा कोषाध्यक्ष, महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान दिल्ली आजीवन सदस्यता : रु. 1000/-

स्वामी 'महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान', मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक रामनारायण चौहान द्वारा एजीएस पब्लिकेशन, डी-67 सैक्टर-6, नोएडा-201301, उत्तर प्रदेश से मुद्रित तथा ऑफिस नं. जी-9 हर्ष काम्प्लेक्स, एलएससी, गाजीपुर, दिल्ली-110096 से प्रकाशित किया। संपादक - रामनारायण चौहान मो. 9990952171, सहसंपादक - श्रीचन्द सैनी मो. 09760899766, टेलीफैक्स 01145082626
समाचार पत्र से संबंधित सभी विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा। पत्र में प्रकाशित सामग्री से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। (प्रिंट 15,000 प्रतियाँ)